महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का अर्जुन सिंह रंगोत्सव कार्यक्रम में भाषण

स्थान :- उज्जैन दिनाकं 27 जनवरी, 2012 समय :- दोपहर:- 2.22 बजे

श्री अर्जुन सिंह जी भारतीय राजनीति के एक दैदीप्यमान नक्षत्र थे। उन्होंने मध्यप्रदेश को सांस्कृतिक दृष्टि विकसित करने की अविस्मरणीय पहल की थी। मैं उनके जैसे संस्कृतिधर्मी राजनेता की स्मृति में इस राष्ट्रीय नाटय समारोह के आयोजन के लिये अभिनव रंगमण्डल के अध्यक्ष श्री शरद शर्मा और उनके सहयोगियों को साधुवाद देता हूं।

उज्जैन नगरी इस देश की संस्कृति का मेरूदंड रही है। यहां अनेक शताब्दियों से विभिन्न कलाओं, रंगमंच और अनेक विधाओं को प्रोत्साहन मिलता रहा है। यह नटराज महाकालेश्वर की नगरी है जो नृत्य, नाट¬ और संगीत के अधिष्ठाता देव है। भगवान श्रीकृष्ण ने इसी नगरी में शिप्रा तट पर स्थित सांदीपनि आश्रम में अपने गुरू सांदीपनि के सान्निध्य में रहकर अल्प समय में सभी विद्याओं और कलाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इस नगरी में महाकवि कालिदास जैसे महान नाटककार हुए जिनके द्वारा रचित "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" नाटक विश्व साहित्य में अद्वितीय स्थान रखता है। ऐसी सांस्कृतिक नगरी में राष्ट्रीय स्तर के नाट¬ समारोह के आयोजन को मैं एक उपलब्धि मानता हूं।

स्वर्गीय अर्जुन सिंह जी का व्यक्तित्व एक बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व रहा । उनका मौलिक चिन्तन, गहन अध्ययन में रूचि और जनमानस के प्रति गहरी संवेदनशीलता का प्रभाव हमेशा ही उनकी कार्यशैली में झलकता रहा। स्व. श्री सिंह जहां भी रहे जिस मंत्रालय का जिम्मा उन्होंने संभाला उनकी सूझबूझ की कार्यशैली ने एक विशिष्ट पहचान बनाई।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में जहां उन्होंने कला, साहित्य और संस्कृति का संरक्षण कर उन्हें नई ऊंचाईयां प्रदान कीं वहीं मानव संसाधन मंत्री के रूप में स्व. श्री सिंह ने देश में शिक्षा में

गुणात्मक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर शिक्षा के लोकव्यापीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किया है। तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में उनके गंभीर प्रयासों से आईआईटी, आईआईएम, जैसे महत्वपूर्ण शिक्षण संस्थानों में वृद्धि हुई है।

मानव संसाधन मंत्री रहते हुए श्री अर्जुन सिंह ने न केवल देश में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण को प्राथमिकता दी बल्कि अन्य और तकनीकी, प्रबंधकीय शिक्षा सुविधाओं के विस्तार पर भी विशेष ध्यान दिया। श्री सिंह ने आईआईटी और आईआईएम जैसी अन्य शिक्षण संस्थाओं के द्वारा वंचित और पिछड़े वर्गों के लिये खोले। उन्होंने इसके लिये इन संस्थाओं की प्रवेश क्षमता में वृद्धि की बल्कि नयी संस्थाएं भी प्रारंभ कीं। श्री अर्जुन सिंह का व्यक्तित्व किसी एक प्रदेश तक सीमित नहीं था, उन्होंने सभी प्रदेशों में केन्द्रीय विश्वविद्यालय और आधुनिक विषयों की शिक्षा देने के लिए संस्थान की स्थापना की। अमरकंटक में आदिवासी विश्वविद्यालय, सागर और बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में केन्द्रीय विश्वविद्याय और भोपाल में नेशनल स्कूल ऑफ प्लानिंग और आर्किटेक्चर उन्हीं के प्रयासों की देन है।

स्व. अर्जुनसिंह ने स्वातंत्रयोत्तर भारतीय राजनीति में अविस्मरणीय योगदान दिया था। जिन्होंने शिक्षा और संस्कृति के लिये विशेष प्रयास किए। उन्होंने हमारी प्रजातांत्रिक व्यवस्था में कला संस्कृति की भूमिका को गहराई से समझा और इस दिशा में राज्य की भूमिका को पूरे दायित्व बोध के साथ रेखांकित भी किया।

चाहे शास्त्रीय संगीत हो, चाहे शास्त्रीय नृत्य, रंगमंच, चाहे ललित कलाएं हो या लोक कलाएं, चाहे साहित्य की विभिन्न विधाएं हो या विश्व कविता की बात- श्री अर्जुन सिंह जी सबको महत्व देते हुए उनके विकास के लिये स्वस्थ वातावरण देते रहे। उन्होंने मध्यप्रदेशमें राष्ट्रीय महत्व की अनेक अकादमियाँ स्थापित की। अनेक सम्मानों की शुरूआत कर मध्यप्रदेश को देश के सांस्कृतिक फलक पर विशेष पहचान दी। उन्होंने अनेक कला रूपों को संरक्षण देने के लिये उपयुक्त वातावरण दिया और उन्हें नया जीवन दिया।

श्री अर्जुन सिंह जी विभिन्न कलाओं, नाटक, संगीत आदि में गहरी रूचि और समझ रखते थे। वे उन चुनिंदा राजनेताओं में रखे जा सकते हैं, जो अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में संगीत या नाटय प्रदर्शन को पूरे मनोयोग से समय देते थे। उन्होंने मध्यप्रदेश में संस्कृति के क्षेत्र में एक ऐसा मॉडल विकसित किया, जिसमें सभी संस्कृति कर्मियों के लिये वैचारिक स्वतंत्रता, रूचि और

स्वाभिमान के लिये पर्याप्त अवसर था। वे चाहते थे कि कलाकार अपने-अपने माध्यमों से भारतीय संस्कृति की विराटता को पुनर्जीवित करें और इसे प्रदूषित होने से बचाएं।

भारत की संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। इस संस्कृति की अभिव्यक्ति: कला एवं साहित्य के माध्यम से होती रही है। संगीत, नृत्य रंगमंच, चित्रकला, मूर्तिकला आदि का गौरवशाली इतिहास विश्व में भारत को सम्मान दिलाता रहा है। इस सांस्कृतिक विराटता ने भारत को विश्व की महान सभ्यताओं में अग्रणी बनाया है। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह की संस्कृति के प्रति समझ बहुत स्पष्ट थी। उनकी आस्था भारत की गंगाजमुनी संस्कृति में आजीवन बनी रही।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में सांस्कृतिक विरासत को अत्यन्त समृद्ध और सम्पन्न बनाने में उनके योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। साहित्य, कला और संस्कृति को जीवन्त करते हुए उन्होंने भोपाल में "भारत भवन" की स्थापना की तो देश भर के कलाकारों, रंगकर्मियों और साहित्यकारों ने मुक्त कण्ठ से उनका अभिनन्दन किया।

भारत भवन का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इसे श्री अर्जुन सिंह का महान योगदान निरूपित किया तथा भारत की सांस्कृतिक राजधानी का विशेषण भोपाल को देते हुए अन्य प्रान्तों में भी भारत भवन की तरह केन्द्र विकसित करने की मंशा व्यक्त की थी जिससे भारत सांस्कृतिक विविधता और उसकी आत्मा की एकता आकार ले सकें। भारत भवन के साथ ही श्री अर्जुन सिंह ने प्रदेश एवं देश के साहित्यकारों, रंगकर्मियों एवं कलाकारों के सम्मान हतु योजनाएं क्रियान्वित की, दूर-दराज के कलाकारों को विश्व भर में भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिये यात्राओं के अवसर दिये।

एक उल्लेखनीय बात और कहना चाहूंगा वो यह कि श्री अर्जुनसिंह साहित्य एवं संस्कृति की स्वायत्तता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने सांस्कृतिक प्रश्नों पर न कभी राजनीति की, न कोई भेदभाव किया, न विचारधारा या रंग विशेष में संस्कृति को रंगने का प्रयत्न किया।

इस प्रसंग में "अभिनव रंगमण्डल" उज्जैन को साधुवाद एवं बधाई देना चाहूंगा, जिसने उनके संस्कृति के योगदान को उनके जीवन काल में अभिनन्दित करते हुए देश के प्रख्यात कलाकारों, साहित्यकारों, पत्रकारों एवं राजनेताओं की मौजूदगी में त्रि-दिवसीय "अर्जुनसिंह संस्कृति प्रसंग"

आयोजित किया था और अब उनकी स्मृति में अभिनव रंगमंडल द्वारा ये सप्त दिवसीय "अर्जुनसिंह रंगोत्सव" आयोजित किया जा रहा है। यही उनके संस्कृति कर्म के प्रति सच्ची श्रृद्धांजलि है।

अभिनव रंगमण्डल को मैं पुन: बधाई दूंगा कि वह अर्जुनसिंह जी के आदर्शों के अनुरूप नाट¬ एवं कलाकर्म के माध्यम से हमारी संस्कृति का संरक्षण-संवर्धन कर रहा है। नाट¬ विधा और कला समीक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों को यह संस्था निरन्तर सम्मानित प्रोत्साहित कर रही है, यह प्रसन्नता की बात है। इस वर्ष के समारोह में असम से लेकर पंजाब-हरियाणा, दिल्ली से लेकर राजस्थान और तमिलनाडु तक के नाट¬ दल भाग ले रहे हैं। मैं सभी कलाकारों और संस्कृति कर्मियों को बधाईयां और मंगलकामनाएं देता हूं।

जय हिन्द।